राजस्थान के लोक देवता

- लोकदेवता से तात्पर्य उन महापुरूषों से है जिन्होंने अपने वीरोचित कार्यों तथा दृढ़ आत्मबल द्वारा समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना, धर्म की रक्षा एवं जन-हितार्थ सर्वस्व न्यौछावर कर दिया तथा ये अपनी अलौकिक शक्तियों एवं लोक मंगल कार्य हेतु लोक आस्था के प्रतीक हो गए। इन्हें जनसामान्य का दु:खहर्ता व मंगलकर्ता के रूप में पूजा जाने लगा। इनके थान देवरे या चबूतरे जनमानस में आस्था के केन्द्र के रूप में विद्यमान हो गए। राजस्थान के सभी लोक देवता छूआछूत, जाति-पाति के विरोधी व गौ-रक्षक एवं असाध्य रोगों के चिकित्सक रहे हैं।
- राजस्थान में 11वीं से 14वीं शताब्दी के बीच इस्लाम का प्रसार एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। जनता की अपने धर्म से डगमगाती आस्था, पशुधन का ह्रास, मंदिरों को नष्ट करना तथा धर्म परिवर्तन कराना जैसी कुछ प्रमुख सामाजिक व धार्मिक समस्याएँ थी। सामाजिक क्षेत्रों में कुछ जातियों को अछूत मानकर उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था तथा कर्मकाण्ड व अंधविश्वास की जड़े मजबूत हो चुकी थी। इन्हीं परिस्थितियों में राजस्थान में लोक देवताओं का आविर्भाव हुआ। धार्मिक भेदभाव के बिना ये देवता जनआस्था के केन्द्र थे। इनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण उस संस्कृति विशेष से स्वयं को जोड़ना था, जो ग्रामीण समाज के निम्न तबके की थी। इन सभी विशेषताओं के कारण आज भी राज्य के जनमानस में इन लोक देवताओं के प्रति अटूट विश्वास व आस्था है।
- मारवाड़ क्षेत्र में हड़बू जी, मेहाजी, पाबूजी, रामदेवजी व गोगाजी सहित पाँचों लोक देवताओं को पंचपीर नाम से जाना गया। इस संदर्भ में एक दोहा प्रचलित है-

'पाबू, हड़बू, रामदेवजी, मांगलिया मेहा
पाँचों पीर पधार जो गोगाजी के गेहा॥'

हड़बू जी

- **जन्म** - 15वीं सदी में भूंडोल, खींवसर (नागौर)
- **पिता** - मेहाजी सांखला
- **माता** - सौभागदे
- **गुरु** - बालीनाथ जी
- **वाहन** - **सियार**
- **पुजारी** - **सांखला राजपूत**

- हड़बू जी रामदेव जी के मौसरे भाई थे। इस बात का पता रामदेवजी की चौबीस वाणियों से चलता है। उसमें उल्लेख है :

'हड़बूजी सांखला हरदम हाजिर गाँव बेंगटी माई'

दूजी देह म्हारी ही जाणौ, हाँ मौसी जाया भाई।

- हड़बू जी **शकुन शास्त्र** के ज्ञाता, गौ रक्षक देवता, वीर योद्धा, योगी-संन्यासी तथा वचनसिद्ध पुरुष थे।
- **इनका मुख्य स्थल** - **बैंगटी गाँव - फलौदी** (इस मंदिर का निर्माण 1721 में जोधपुर महाराजा अजीत सिंह ने करवाया)
- इनके भक्त इनकी बैलगाड़ी की पूजा करते हैं जिससे वह अपंग व कमजोर गायों के लिए चारा व पानी लाते थे।
- हड़बूजी ने चाखु गाँव (बाप, फलौदी) में तपस्या की थी। राव जोधा ने चाखु गाँव के पास स्थित बावनी जागीर हड़बूजी को भेंट की थी।

☞ **नोट**-इन्होंने राव जोधा को मेवाड़ के अधिकार से मण्डोर को मुक्त कराने हेतु अपने आर्शीवाद के रूप में कटार भेंट की। मण्डोर विजय के उपरान्त कृतज्ञता स्वरूप राव जोधा ने बैंगटी गाँव हड़बू जी को अर्पित किया।

☞ **नोट**- हड़बू जी की पत्नी सती नहीं हुई थी।

मेहाजी मांगलिया

- **जन्म** - तापू गाँव ओसियाँ, जोधपुर में भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को हुआ।
- **पिता** - गोपाल राव सांखला।
- **माता** - मायड़दे
- **मंदिर** - बापणी, फलोदी।
- **कर्नल जेम्स टॉड के** अनुसार मेहाजी अपने नाम के आगे ननिहाल का गोत्र मांगलिया लगाते थे। ये मांगलियों के इष्टदेव हैं।
- बापणी (फलौदी) में हर साल **भाद्रपद कृष्ण अष्टमी** को इनका मेला भरता है। इस दिन मेहाजीजन्माष्टमी के रूप में मनाई जाती है। इस मंदिर में मेहाजी की घुड़सवार प्रतिमा है। इनके मंदिर में मांगलिया जाति के पुजारी होते हैं। कहा जाता है कि यहां के पुजारी के वंश में वृद्धि नहीं होती है बल्कि गोद ली हुए संतानों से वंश आगे बढ़ता है। ये लोगों की सेवा, सहायता करने व उन्हें संरक्षण देने के कारण देवता कहलाये।

- इनका प्रिय घोड़ा **'किरड़-काबरा'** था।
- मेहाजी ने अपने समकालीन मारवाड़ नरेश रावचूड़ा को आशीर्वाद स्वरूप एक तलवार प्रदान की थी। पहले मारवाड़ की राजधानी पाली में थी, मारवाड़ की दूसरी राजधानी खेड़ में बनी, मारवाड़ की तीसरी राजधानी मंडोर में बनी। मंडोर पहले मारवाड़ का हिस्सा नहीं था। मेहाजी के आशीर्वाद से रावचूड़ा ने मंडोर को जीता था।
- मेहाजी के बारे में एक कथा के अनुसार-मेहाजी अपने पिता की अस्थियाँ प्रवाहित करने पुष्कर गये थे जहाँ उनकी भेंट पाना गूजरी से हुई थी। मेहाजी ने उसे अपनी धर्म बहन बना लिया। मेहाजी ने पाना गूजरी को वचन दिया कि कभी भी संकट के समय वह उसकी मदद करेंगे। इसके बहुत समय बाद एक बार पुष्कर में भीषण अकाल पड़ा। अकाल के दौरान पाना गूजरी की हजारों गायों के लिए चारे पानी का संकट खड़ा हो गया। मुसीबत के समय पर पाना को अपने धर्म भाई मेहाजी के वचन की याद आयी। पाना अपनी गायों को लेकर मेहाजी के गांव तापू में पहुँच गई। तापू में पाना गूजरी की गायों को जैसलमेर का शासक **राणंगदेव** खोल ले गया। मेहाजी पाना गूजरी की गायों की रक्षा करने हेतु जैसलमेर के शासक **राणंगदेव** के साथ युद्ध करते हुए बापणी गाँव में वीरगति को प्राप्त हुए।
- **वीरमेहाप्रकाश** ग्रंथ की रचना जसदान बीठू ने की।

पाबूजी

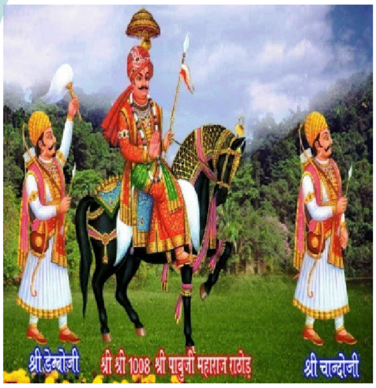

- **जन्म** - कोलूमंड, फलौदी, 1239 ई में चैत्र अमावस्या को हुआ।
- **पिता** - धांधल राठौड़
- **माता** - कमला देवी
- **पत्नी** - फूलमदे। (यह अमरकोट के शासक सूरजमल सोढ़ा की पुत्री थी जिसे **सुप्यारदे** के नाम से भी जाना जाता है)
- **भाई** - बुद्‌ढोजी
- **बहन** - पैमल
- **भतीजा** - रूपनाथजी
- **सवारी** - केसरकालमी
- यह मारवाड़ के पंचपीरों में **प्रथम पूज्य** देवता हैं।
- इनका मेला प्रतिवर्ष चैत्र अमावस्या को **कोलूमंड, फलौदी** में भरता है।

पाबूजी के उपनाम

- लक्ष्मण का अवतार
- ऊँटों के देवता
- प्लेग रक्षक देवता
- गौ रक्षक देवता
- हाड़-फाड़ के देवता
- अम्बुवाल
- सिद्धदेव
- सिलाल

- इनका प्रतीक भाला लिए अश्वारोही तथा सिर पर बायीं ओर **झुकी हुई पगड़ी** है।
- इन्होंने **देवल चारणी** की गायों को छुड़ाते हुए **देचूँ (फलौदी)** नामक स्थान पर अपने बहनोई जींदराव खींची के साथ हुए युद्ध में वीरगति प्राप्त की। पाबूजी की पत्नी फूलमदे पाबूजी के वस्त्रों के साथ सती हुई थी।

☞ **नोट** – पत्नी द्वारा पति के किसी प्रतिचिह्न के साथ सती होने को **अनुमरण या महासती** कहा जाता है।

देवलचारणी

- देवलचारणी पाबूजी की धर्म बहन थी जिसके पास एक चमत्कारिक घोड़ी थी। जिसका नाम **केसरकालमी** था। देवलचारणी जिसे **वीरवड़ी** नाम से भी जाना जाता है इसने अपनी चमत्कारी घोड़ी पाबूजी को सौंपी और बदले में अपने पशुओं की रक्षा करने का वायदा लिया। पाबूजी के बहनोई जो जायल, नागौर का शासक था वह इस चमत्कारी घोड़ी को पाना चाहता था। लेकिन उसे नहीं मिली जिसका बदला लेने के लिए उसने देवलचारणी के पशुओं पर आक्रमण किया।

पाबूजी ऊँटों के देवता क्यों ?

- मारवाड़ में सर्वप्रथम ऊँट लाने का श्रेय पाबूजी को ही दिया जाता है। यह प्रसंग इस तरह है कि गूड़ोजी की पुत्री **केलमजी** का विवाह गोगाजी के साथ तय हुआ तब पाबूजी ने अपनी भतीजी को दहेज में ऊँट देने का वचन दिया था। इसी वचन को पूरा करने के लिए इन्होंने लकेंऊ गाँव सिंध में दूदा सूमरा के ऊँटों के दल को लूटने का मन बनाया और लूट भी लाये थे। इन ऊँटों की जिम्मेदारी पाबूजी ने हरमल राईका को सौंपी थी। तब से ही ऊँट पालने वाली जाति **राईका** या **रेबारी** पाबूजी को अपना **आराध्य देव** मानती है तथा ऊँटों के बीमार होने पर इनके नाम की ताँती बांधी जाती है।

☞ **नोट** – **अन्तादेवी**, बीकानेर **ऊँटों की देवी** मानी जाती है।

पाबूजी की फड़

- किसी भी महत्त्वपूर्ण घटना या महापुरुष की जीवनी का कपड़े पर चित्रात्मक अंकन ही फड़ कहलाता है। पाबू जी की फड़ जो लगभग 30 फीट लम्बी व 5 फीट चौड़ी होती है। इस फड़ का वाचन **भील, थोरी, नायक व आयड़ी** जाति द्वारा रावणहत्थे के साथ किया जाता है। पाबूजी की फड़ राजस्थान में लोकप्रिय फड़ है। फड़ का वाचन केवल रात्रि में होता है। फड़ वाचन के समय भोपा वाद्य यंत्र के साथ फड़ बाँचता है तथा भोपी सम्बंधित प्रसंग वाले चित्र को लालटेन की सहायता से दर्शकों को दिखाती है तथा साथ में थाली नामक नृत्य भी करती है। ऊँटों के बीमार होने पर भी फड़ का वाचन किया जाता है।

पाबूजी के पावड़े

- **पावड़े** – पाबूजी से संबंधित पद्यात्मक लोकगाथा है जिसे **माठ वाद्ययंत्र** के साथ थोरी जाति के लोग बड़े उत्साह-उमंग के साथ गाते हैं।

  जैसे :

  ''ओ जी ओ पाबूजी थोरी केसर घूघरिया या गमक्कावे''

  ''ओ पाबूजी, आ तो भगतों रे हित कारणे''

- पाबूजी के अनुयायी विवाह में साढ़े तीन फेरे लेते हैं तथा इनके द्वारा **थाली नृत्य** किया जाता है।
- **पाबू प्रकाश नामक ग्रन्थ** – (पाबूजी की जीवनी) **'आशिया मोड जी'** द्वारा लिखा गया है।

❖ **अन्य ग्रंथ :-**

☞ **पाबूजी रा छन्द** – मेहाचारण, बीठूमेहा।

☞ **पाबूजी रा दोहा** – कवि लघराज।

☞ **पाबूजी रा गीत** – कवि बांकीदास।

☞ **पाबूजी रा सोरठा** – रामनाथ कविया।

☞ **पाबू धाणी री रचना** – थोरी जाति द्वारा सारंगी पर किया जाने वाला पाबूजी का यशोगान।

☞ **पाबूजी री बात** – लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत।

- चाँदा, डेमा, पेमा, खाबू, खलमल, खंगार, बासल, (सात भील भाई जो मालवा के आना बाघेला से नाराज़ होकर पाबूजी के पास आये थे।) सावन्तजी, हरमल राईका, सलजी सोलंकी पाबूजी के प्रिय सहयोगी थे।

❖ **मंदिर :**

- पाबूजी का मंदिर कोलूमण्ड (फलौदी) में स्थित है।
- इनका एक अन्य मन्दिर **आहड़ (उदयपुर)** में भी स्थित है।
- पाबूजी नारी सम्मान, शरणागत रक्षा, गौरक्षा व वीरता के लिए प्रसिद्ध है। इनकी आन-बान को व्यक्त करने वाला एक दोहा मारवाड़ में प्रचलित है-

'थोड़ा जोड़ो पागड़ी, मुच्छातणी मरोड़।

ये पाबू की राखली, रजपूती राठौड़॥'

रामदेवजी

- **जन्म** - भाद्रशुक्ल द्वितीया को 1352 ई. ऊडू कासमेर (शिव तहसील, बाड़मेर) में।
- **'बाबे री बीज'**-रामदेव जी का जन्म भाद्रशुक्ल द्वितीया को हुआ अत: इस दिन को बाबे री बीज नाम से जाना जाता है। राजस्थान में द्वितीया को **बीज** नाम से जाना जाता है।

- **पिता** - अजमल जी तँवर (अर्जुन वंशीय)
- **माता** - मेणादे
- **पत्नी** - **निहालदे/नैतलदे** (जो अमरकोट, पाकिस्तान के राजा **दलैसिंह सोढ़ा** की दिव्यांग पुत्री थी। विवाह की वेदी पर रामदेवजी की अलौकिक शक्ति से नैतलदे की अपंगता दूर हो गई। यह **रूक्मणी** का अवतार मानी जाती है।)
- **भाई** - वीरमदेव
- **बहन** - लाछा व सुगना (सुगना का विवाह पूंगलगढ़ (बीकानेर) के नरेश विजयसिंह के साथ हुआ।)
- **गुरु** - **बालीनाथ** (इनकी समाधि मसूरिया पहाड़ी (जोधपुर) पर स्थित है।

- **सवारी** – **लीला घोड़ी**
- रामदेवजी का गीत सबसे लम्बा गीत है।
- इनके मन्दिर को **'देवरा'** कहा जाता है।
- **ब्यावले**– रामदेवजी के भजन।
- **नेजा** – इनकी ध्वजा नेजा कहलाती है जो पंचरंगी या श्वेत होती है।

नेजा

- **जम्मा** – इनके रात्रि जागरण को जम्मा कहते हैं।
- **भांभी** – रामदेवजी का पुजारी।
- **जातरू** – इनके यहाँ आने वाले दर्शनार्थी।
- **फूल** – रामदेवजी की सोने चाँदी से बनी प्रतिमा जो श्रद्धालु गले में पहनते हैं तथा रामदेवजी की आण लेते हैं। आण का अर्थ–**सौगंध।**
- रामदेव जी के भक्त इनकी समाधि पर **कपड़े के घोड़े** चढ़ाते हैं।
- **पर्चा** – पर्चा शब्द हिन्दी के परिचय शब्द से बना है, इनके चमत्कारी कार्य ही इनका परिचय देते थे। रामदेवजी की कृपा से किसी भक्त का कार्य सिद्ध हो जाता है तो कहा जाता है कि बाबा ने अवतारी होने का पर्चा दिया है। इनके 24 पर्चे प्रमुख हैं।
- इन्होंने **बाल्यावस्था में सातलमेर, पोकरण** में **भैरव** नामक राक्षस का वध किया तथा अपना निवास स्थल जैसलमेर में पोकरण के पास रूणेचा को बनाया। भैरव राक्षस की घटना का उल्लेख हमें **मुहणौत नैणसी** द्वारा रचित **मारवाड़ रा परगना री विगत** में मिलता है। रूणेचा का वर्तमान नाम **रामदेवरा** है। रूणेचा में ही रामदेवजी ने **भाद्रपद्र शुक्ल एकादशी (1458)** को समाधि ली। रूणिचा में स्थित इनके समाधि स्थल को **'रामसरोवर की पाल'** के नाम से जाना जाता है। यहाँ **भाद्रपद शुक्ल द्वितीया** से **भाद्रशुक्ल एकादशी** तक मेला भरता है जिसकी मुख्य विशेषता **'साम्प्रदायिक सद्‌भावना'** है। 1931 ई. में रामदेव जी की समाधि पर बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने मंदिर बनवाया। जहाँ चूरमा, दूध, नारियल, धूप आदि से इनकी पूजा होती है। इनके यहाँ **कुष्ठ रोग व हैजा** ठीक होता है। इन्हें **पीरो का पीर** व **नीले घोड़े वाला बाबा** कहा जाता है। हिन्दू इन्हें **कृष्ण का अवतार** तथा मुस्लिम इन्हें **रामशाह पीर** कहते हैं।

☞ **नोट**–मक्का से आये पाँच पीरों ने रामदेवजी के चमत्कारों से प्रभावित होकर कहा था कि–**'मैं तो पीर हाँ और थे म्हा पीराँ का पीर हो'।** यह परचा रामदेवजी ने पीरो को रामदेवरा से 12 किलोमीटर दूर पंचपीपली नामक स्थान पर दिया।

- इनका राजस्थान में प्रसिद्ध भजन

  हे रूणि चेरा धणियां अजमल जी रा कँवर।
  माता मैण दे रा लाल राण नैतल रा भरतार
  म्हारो हेलों सुणों जी रामा पीर जी।

- इन्होंने **'कामडिया पंथ'** चलाया जिनकी महिलायें **तेरहताली नृत्य** करती हैं। कामडिया पंथ को मानने वाले लोग शव को दफनाते हैं।
- रामदेव जी ने मेघवाल जाति की **डाली बाई** को अपनी धर्म बहिन बनाया। डाली बाई रामदेव जी की अनन्य भक्त थी जिन्होंने रामदेव जी से एक दिन पूर्व जल समाधि ली थी। मेघवाल जाति के भक्त **रिखिया** कहलाते हैं। रामदेवजी ने समाज सुधार के क्षेत्र में छूआछूत और ऊँच-नीच का विरोध किया इन्हें हरिजनों से विशेष प्रेम था इस संबंध में उनका कथन है-

''हरिजन म्हारे हार हिये रा,
मोत्या सूं मूंगा कहावे म्हारा लाल।''

- रामदेव जी के प्रतीक चिह्न के रूप में खुले चबूतरे पर ताख (आला) बनाकर उसमें संगमरमर या पीले पत्थर के इनके **पगल्ये** बनाकर पूजे जाते हैं।
- रामदेवजी ने गुरू की महत्ता स्वीकार करते हुए कहा कि-**'ये संसार अथाह समुद्र के समान है, जिसे गुरु ही पार उतार सकता है।'** इन्होंने मूर्तिपूजा व तीर्थयात्रा में अविश्वास प्रकट किया। इन्होंने कहा था कि **'पूजत पत्थर उमर सब खोई, सुपने अक्ल नाहीं आई'** इन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया। यूरोप की क्रान्ति से बहुत पहले ही रामदेवजी ने हिन्दू समाज को **'समता और बंधुत्व'** का संदेश दिया था।

परावर्तन अभियान

- प्रदेश में जब हिन्दू समाज के लोग इस्लाम धर्म की ओर अग्रसर हो रहे थे। तब रामदेवजी ने इस पर रोक लगाते हुए एक अभियान चलाया जिसके तहत् मुस्लिम बने हिन्दुओं को पुनः हिन्दु धर्म में दीक्षित किया गया। इसे ही शुद्धि आंदोलन या परावर्तन अभियान कहा जाता है।
- रामदेवजी एक मात्र लोक देवता, जो कवि भी थे। इनकी प्रसिद्ध रचना **'चौबीस-वाणियाँ'** है।
- **छोटा रामदेवरा** -जूनागढ़, गुजरात में स्थित है।

❖ **इनके अन्य देवरे निम्न हैं-**

1. **बराठियाँ** - रायपुर (ब्यावर), यहाँ भाद्रशुक्ल एकादशी को मेला भरता है।
2. **सुरताखेड़ा** - चित्तौड़ यहाँ भाद्रशुक्ल एकम से तृतीया तक मेला भरता है।
3. **मसूरिया** - जोधपुर
4. **खुड़ियावास** - परबतसर (डीडवाना) इसे राजस्थान का **दूसरा रामदेवरा** कहते हैं।

- रामदेवजी की फड़ का चित्रण चौथमल चितेरे ने किया। इनकी फड़ का वाचन मेघवाल जाति के लोग या कामड़िया पंथ के लोग करते हैं।
- **लखीबंजारा, रतना राईका व हरजी भाटी** का संबंध रामदेव जी से था।

☞ **नोट**–लखी बंजारा राजस्थानी लोक वार्ताओं का एक बंजारा नायक था जिसके पास माल ढोने के लिए लाख बैलों का कारवां था। लखी बंजारे के संबध में एक लोकगीत प्रचलित है–**'लखीबंजारा म्हाने ले चालो मारवाड़'**। लखीबंजारे को भी रामदेवजी ने तब परचा दिया, जब लखीबंजारा मिश्री से भरी गाड़ी को सीमा पार ले जाने हेतु टैक्स से बचने के लिए मिश्री की जगह गाड़ी में नमक बताया और सीमा पार हो गया। किन्तु जब गाड़ी में देखा तो सारी मिश्री नमक में परिवर्तित हो गई। तब से ही यह रामदेवजी का अनन्य भक्त हो गया।

- **बाबा रामसा पीर** नामक ग्रंथ–**आईदानसिंह भाटी** ने लिखा है।

☞ **नोट**–राजस्थान सरकार ने रामदेवरा में **पेनोरमा** का निर्माण करवाया।

☞ **नोट**–बाड़मेर में रामदेवजी के जन्म स्थान पर 2019 में इनका मंदिर बनया गया जिसमें जैसलमेर के पीले पत्थरों का प्रयोग किया गया।

हरजी भार्टी

- हरजीभाटी रामदेवजी के परमभक्त थे। पण्डित की ढाणी बीकमकौर के पास ओसियाँ, जोधपुर निवासी थे। इन्हें रामदेवजी ने परचा दिया था।

इनकी प्रमुख रचनाएँ– **रामदेवजी की वेलि, मूलारंभ की वीरता, आगम पुराण भादरवा री मैमा, बाबा रामदेवरों ब्यावलों**

बाबा रामदेव समाधी

रामसरोवर

परचा बावड़ी

डाली बाई का कंगन

डालीबाई की जाल

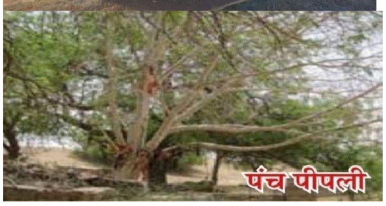
पंच पीपली

भैरव राक्षस गुफा

गोगाजी

- **जन्म** – ददरेवा (चुरू) में भाद्रपद कृष्ण नवमी को (विक्रम संवत 1003)
- **पिता** – जेवरसिंह
- **माता** – बाछल देवी
- **पत्नी** – **केलमदे**
- **सांपों के देवता** कहे जाते हैं।
- **प्रतीक चिह्न**–**'सर्प'**
- **सवारी**–**'नीली घोड़ी'**। (इसे गोगा बप्पा भी कहते हैं।)
- **गुरु**–**गोरखनाथ**
- जब लुटेरे महमूद गजनवी के आक्रमण बार बार हो रहे थे और 1025 में सोमनाथ का मंदिर लूटकर वर्तमान राजस्थान के उत्तरी भाग से गुजर रहा था तो गोगाजी यह सहन नहीं कर सके और अपने 47 बेटे व 60 भतीजे के साथ **गजनवी** से युद्ध किया जहाँ गजनवी ने इनको **'जाहिर पीर'** कहा। इस युद्ध का उल्लेख कर्नल जेम्स टॉड ने किया।

☞ **नोट**–जाहिर पीर का अर्थ–साक्षात् देवता।

- **दयालदास री ख्यात** व रणकपुर प्रशस्ति के अनुसार गोगाजी अपने मौसरे भाई अर्जुन और सुर्जन से युद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। यह युद्ध ददरेवा से उत्तर की ओर **खुड़ी** नामक गाँव के पास हुआ। जिसमें ये कमधज होकर लड़े थे, जहाँ इनका शीश गिरा वह स्थान ददरेवा, चुरू में है जहाँ शीशमेड़ी का निर्माण किया गया और जहाँ धड़ गिरा वहाँ धुरमेड़ी का निर्माण किया गया जो नोहर, हनुमानगढ़ में स्थिति है।

मेड़ी

- मेड़ी का अर्थ है जमीन से ऊपर उठा हुआ स्थान। मेड़ी शब्द अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में मकान के ऊपर दूसरी मंजिल पर स्थित निवास के लिए लिया जातो है।

गोगामेड़ी

- गोगामेड़ी (नोहर, हनुमानगढ़) इनका समाधि स्थल है। जिसकी बनावट **मकबरेनुमा** है जिसके मुख्य द्वार पर **'बिस्मिल्लाह' एवं ॐ** लिखा है। ये मकबरेनुमा स्वरूप फिरोजशाह तुगलक द्वारा प्रदान किया गया। गोगामेड़ी का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के **महाराजा गंगासिंह** ने दिया। गोगा जी के मंदिर में **एक माह हिन्दू व ग्यारह माह मुस्लिम** पुजारी होते हैं। मुस्लिम पुजारी को **चायल** कहा जाता है। गोगामेड़ी के पास प्रसिद्ध तालाब **'गोरख तालाब'** है। जहाँ की मिट्टी से सर्पदंश का ईलाज किया जाता है।
- **शाकल नृत्य**- गोगाजी के हिन्दू-मुस्लिम अनुयायी ढोल-नगाड़े के साथ नृत्य करते हैं। नाचते समय अपने पीठ और सिर पर लोहे की जंजीर मारते हैं।
- **इनकी लोक**-गाथा **डेरू** नामक वाद्ययंत्र के साथ गायी जाती हैं।
- गोगाजी की **ओल्डी** किलोरियो की ढाणी सांचोर जिले में स्थित है। जिसका निर्माण **केरिया गाँव के राजाराम कुम्हार** ने करवाया।
- मानसून के आगमन पर जब किसान हल जोतने जाते हैं तब हल पर नौ गांठों वाली राखी बांधी जाती है। जिसे **गोगा राखड़ी** कहा जाता है। ये नौ गांठे गोगाजी की जन्म तिथि का प्रतीक है।
- राजस्थान में इनकी पूजा मिट्टी का **'घोड़ा'** बनाकर की जाती है।
- इनके **'थान'** खेजड़ी पेड़ के नीचे बने होते हैं, जहाँ पर विवाह के तोरण रखे जाते हैं।
- इनके लिए कहावत प्रसिद्ध है- **'गाँव-गाँव खेजड़ी अर गाँव-गाँव गोगो'**।
- गोगाजी के मेले में यू.पी. से आने वाले भक्तों को **'पूरबिया'** कहा जाता है जो केसरिया वस्त्र पहन कर आते हैं। गोगाजी को राजस्थान के अलावा हिमाचल प्रदेश हरियाणा व गुजरात में भी पूजा जाता है।
- गोगामेड़ी के चारों ओर विस्तृत जंगल को गोगाजी की **'बणिरोपण एवं जोड़'** के नाम से जाना जाता है।

☞ **नोट**-कवि मेह ने **'गोगाजी का रसावला'** ग्रन्थ की रचना की जिसमें गोगाजी के मुसलमानों के साथ हुए युद्धों का वर्णन तथा गोगाजी के वीरतापूर्वक कार्यों का वर्णन है।

- गोगाजी की 17वीं पीढ़ी में कर्मसिंह हुए जिन्होंने बलात् मुस्लिम धर्म अपनाया और अपना नाम कायमखान रखा। इनके वंशज कायमखानी मुसलमान, गोगाजी को अपना पूर्वज मानकर पूजा करते हैं।

गोगाजी साँपों के देवता क्यों ?

- गोगाजी की पत्नी–केलमदे को एक बार सर्प ने डस लिया था जिससे उसके पूरे शरीर में जहर फैल गया इससे गोगाजी क्रोधित हो गये थे और उन्होंने अग्नि प्रज्वलित कर उस पर तेल की कढ़ाई रखी तथा सर्प विनाशक मंत्र पढ़ने लगे।

  जिसके कारण आस–पास के सभी साँप आकर कढ़ाई में गिरने लगे तब नाग राजा तक्षत प्रकट हुए और उन्होंने गोगाजी से माफी मांगते हुए केलमदे का जहर चूस लिया और गोगाजी को अपना देवता स्वीकारा। तब से गोगाजी सांपो के देवता कहलाए। आज भी सर्प दंश से पीड़ित व्यक्ति का गोगामेड़ी में ईलाज किया जाता है जहाँ गोगाजी का पुजारी साँप के जहर को चूसकर कर थूक देता है तथा इनके जन्म स्थल ददरेवा में स्थित तालाब की मिट्‌टी का लेप करने से भी सर्प का जहर उतर जाता है।

गौ रक्षक देवता गोगाजी

- माना जाता है कि अफगानिस्तान के शाह गायों को चुरा ले गये थे तथा एक बड़ी संख्या में ईद पर गायों की कुर्बानी दी जानी तय थी तब गोगाजी शाह को पराजित करके गौ धन को वापस सुरक्षित ले आये। इसी कार्य के कारण उन्हें गौ रक्षक देवता कहा जाता है।

गोगाजी के जन्म की कथा

- ददरेवा के राजा जेवर की शादी बाछलदे के साथ हुई लेकिन लम्बे समय तक इनके कोई संतान नहीं हुई तब जेवर जी की शादी बाछल की बहन काछल से करवा दी गई लेकिन इनके भी कोई संतान नहीं हुई। रानी बाछल गोरखनाथ जी की अनन्य भक्त थी अत: एक बार गोरखनाथ जी ने उन्हें दर्शन दिए और कहा कि पुत्र प्राप्ति का वरदान लेने कल सुबह जल्दी आना। ये बात जब रानी काछल ने सुनी तो अपनी नंनद के बहकावे में आकर अपनी बहन के साथ छल करते हुए बाछल से पहले वरदान लेने काछल चली गई और जब बाछल पहुँची तो गोरखनाथ जी ने कहा दो बार वरदान लेने कैसे आयी हो तब बात स्पष्ट हुई कि काछल ने यह छल किया है तो गोरखनाथ जी क्रोधित होते हुए बोले कि काछल ने धोखे से वरदान लिया है तो उससे उत्पन्न होने वाली संतान धूर्त होगी। तब रानी बाछल की विनती पर गोरखनाथ जी ने रानी को गुगल दिया और सेवन करने को कहा। तब गोगाजी का जन्म हुआ और सत्य प्रतापी गोगाजी संसार में अजर–अमर हुए। इनका नाम गोगा, गोरखनाथ व गुगल से पड़ा।

देवनारायणजी

- **जन्म – बगड़ावत वंशीय गुर्जर** परिवार में माघ शुक्ल षष्ठी, 1223 ई. में, मालासेर डूंगरी आसीन्द, भीलवाड़ा में हुआ।
- **पिता** – सवाई भोज
- **माता** – सेडू, खटानी, देवास, म.प्र.।
- **पत्नी** – पीपलदे–धार–म.प्र. नरेश जयसिंह की पुत्री।
- **बाला– बाली**–इनकी संतान।
- **सवारी– लीलागर**।
- **उदयसिंह**–इनके बचपन का नाम था, इन्हें उदा या उदल भगवान भी कहा जाता है।
- **मूल देवरा–गोठा दड़ावत** आसीन्द, भीलवाड़ा। आसींद में खारी नदी के तट पर सवाई भोज मंदिर स्थित है। इस मंदिर में यात्रियों को भोजन के रूप में घाट और छाछ परोसी जाती है।
- इनके प्रमुख अनुयायी गुर्जर जाति के लोग होते हैं।

देवनारायण जी की फड़

- इनकी फड़ राजस्थान की सबसे लम्बी तथा अत्यधिक चित्रित जिसमें 335 गीत हैं, यह लगभग 1200 पृष्ठ में है जिसमें लगभग 15000 पंक्तियाँ है जिसे **जंतर** के साथ अविवाहित गुर्जर भोपे बांचते है। इस पर 5 रू. का **डाक टिकट 2 सितम्बर, 1992** को जारी किया गया। देवनारायणजी प्रथम लोक देवता हैं जिन पर 2011 केन्द्रीय संचार मंत्रालय द्वारा 5 रू. का डाक टिकट जारी किया गया।
- इनके मन्दिर में इनकी प्रतिमा की पूजा न होकर **ईंट की पूजा** की जाती है। इनके **छाछ–राबड़ी का भोग** लगाया जाता है।

❖ **इन्हें निम्न नामों से जाना जाता है :**

- ☞ **विष्णु का अवतार**
- ☞ **आयुर्वेद के ज्ञाता**
- ☞ **औषधियों के देवता**
- ☞ **चमत्कारी लोक–परुष**
- ☞ **राज्य–क्रान्ति का जनक**
- ☞ **राणा सांगा के ईष्टदेव**

- इन्होंने गोबर और नीम का महत्त्व समाज को बताया। इनका मेला भाद्रपद शुक्ल 6–7 को भरता है।

अन्य देवरे

- **देवमाली** – **मसूदा, ब्यावर जिला** समाधि-स्थल जहाँ इनकी मृत्यु भाद्रशुक्ल सप्तमी को हुई थी। इस गाँव को बगड़ावतों का गाँव कहा जाता है। खारी नदी के किनारे भिनाय के शासक राणा दुर्जनशाल तथा बगड़ावतों के 24 भाईयों में युद्ध हुआ यहाँ युद्ध में मारे गये सभी बगड़ावतों की देवली बनी हुई है।

  नोट-देवनारायण जी से पीपलदे द्वारा संतानविहीन छोड़कर न जाने के आग्रह पर बैकुण्ठ जाने से पूर्व पीपलदे से एक पुत्र बिला एवं एक पुत्री बिली उत्पन्न हुई। उनका पुत्र ही उनका प्रथम पुजारी हुआ।

- **देवधाम जोधपुरिया** – निवाई टोंक। गुर्जर समाज का बड़ा पौराणिक तीर्थ स्थल, खारी व मांसी नदियों के संगम पर स्थित है। यहाँ स्थित देवनारायण मंदिर में देवजी की प्रतिमा लीलागर पर सवार है। इस मंदिर में बगड़ावतों की शौर्यगाथाओं के चित्र बने हुए हैं। यहीं पर इनकी माता सेडूजी का मंदिर स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष भाद्रशुक्ल सप्तमी को देवजी का मेला भरता है।

- **देवडूंगरी** – चित्तौड़गढ़। यहाँ स्थित मंदिर का निर्माण राणा सांगा ने अपने आराध्य देव, देवनारायण जी की स्मृति में करवाया।

- देवनारायणजी के जीवन चरित्र पर रानी लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत द्वारा **'बगड़ावत भारत ग्रंथ** मारवाड़ी' भाषा में लिखा गया है।

☞ **नोट**-देवनारायणजी पर फिल्म बन चुकी है, जिसमें देवजी कि भूमिका –**नाथूसिंह गुर्जर** ने निभाई जो भाजपा के विधायक और सांसद रह चुके हैं।

☞ **नोट**-**भिनाय-अजमेर** के राणा दुर्जनसाल ने देवनारायणजी के पिता सवाई भोज की हत्या की थी, तो देवजी ने अपने भाई महेन्दु, मानसिंह व मदन के सहयोग से भिनाय के राणा को मारकर महेन्दु को वहाँ का शासक नियुक्त किया। इस घटनाक्रम को **'बगड़ावतों की महाभारत'** कहा जाता है।

☞ **नोट- देवनारायण पेनोरमा मालसेर आसीन्द में स्थित है।**

देवनारायणजी का मध्यप्रदेश से क्या नाता था ?

- **भिनाय-अजमेर** के शासक दुर्जनशाल ने देवनारायण जी के पिता सवाई भोज की हत्या कर दी थी। जिसमें देवनारायण जी के 23 भाई भी मारे गए अर्थात् बगड़ावतों का सर्वनाश कर दिया गया। तब इनकी माता सेडू खटाणी इन्हें छुपते-छुपाते अपने पीहर देवास ले आयी जहाँ इनका लालन-पालन हुआ और यहीं पर धारनरेश जयसिंह की बीमार पुत्री पीपलदे का देवनारायणजी ने आयुर्वेद पद्धति से उपचार किया इसलिए जयसिंह ने अपनी पुत्री पीपलदे का विवाह उदयसिंह से कर दिया।

☞ **नोट- माकड़जी-देवनारायणजी के सहयोगी थे।**

तेजाजी :

- **जन्म** – नागवंशीय धौल्या गोत्र के जाट परिवार में 1074 ई. में,**खड़नाल /'खड़नाल्या'** पबरतसर, डीडवाना जिले में, माघ शुक्ल चौदस।
- **पिता** – ताहड़ जी
- **माता** – राजकुँवरी
- **भाई** – बलराम
- **भाभी** – कैला
- **पत्नी** – **पैमल** (पनेर, किशनगढ़, अजमेर के रामचन्द्र की पुत्री)
- **गुरु** – **गोसाई व मंगलनाथ जी**।

❖ **तेजाजी के उपनाम :**

- **साँपों का देवता**
- **काला और बाला का देवता**
- **अजमेर का लोक देवता**
- **गायों का मुक्तिदाता**
- **कृषि का उपकारक देवता**
- **नारू रोग मुक्ति दाता**

प्रज्ञान

- **पुजारी-घोड़ला**।
- **थान**-इनका पूजा-स्थान।
- मुर्ति में इन्हें भालाधारी अश्वारोही, जिनकी जीभ पर सर्प डसते हुए दिखाया गया है।
- इन्होंने **लाछा गूजरी** की गायें मेर के मीणाओं से छुड़वाई।
- तेजाजी की मृत्यु का समाचार उनके घर **लीलण घोड़ी** (सिणगारी) द्वारा पहुँचाया गया था।
- परबतसर, डीडवाना में तेजाजी का पशु मेला भरता है जिससे राज्य को सर्वाधिक आय प्राप्त होती है। यहाँ स्थित तेजाजी मंदिर का निर्माण जोधपुर महाराजा अभय सिंह ने करवाया था।

❖ **इनके मुख्य थान :-**

1. **सैंदरिया** – ब्यावर यहाँ तेजाजी को **बासग** नामक सर्प ने डसा था और यहाँ भाद्रशुक्ल दशमी को मेला भरता है।

2. **सुरसुरा** – किशनगढ़, अजमेर–यहाँ तेजाजी की मृत्यु हुई थी। इस निर्वाण स्थल पर तेजाजी की जागीर्ण निकाली जाती है।

3. **ब्यावर** – ब्यावर के तेजा चौक में भाद्रशुक्ल दशमी को मेला भरता है।

4. **भांवता** – **अजमेर** यहाँ सर्पदंश की गौ मुत्र से नि:शुल्क चिकित्सा होती है।

- **बासीदुगारी** – **बूंदी**–तेजाजी की कार्यस्थली के रूप में प्रसिद्ध स्थल।

☞ **नोट**– **तेजाजी की मृत्यु के पश्चात् इनकी पत्नी पैमल दे सती हुई थी।**

- **वीर तेजाजी** – नामक फिल्म राजस्थानी भाषा रामराज नाहटा ने बनाई।
- तेजाजी पर 7 सितम्बर, 2011 को 5 रू. का डाक टिकट जारी किया गया।
- तेजाजी को जाट **शिव** का अवतार मानते हैं।

☞ **नोट**–इनके यहाँ कुत्ते के काटे हुए का भी ईलाज किया जाता है।

- तेजाजी का ध्वज सफेद वस्त्र का होता है जिसमें **चाँद–सूरज, नाग व खेजड़ी का चित्रण** होता है।
- **पाँचू मेघवाल, खेताकुम्हार व जैतराज** जाट तेजाजी के साथी थे।
- तेजाजी को **गाय का कच्चा दूध, मिश्री व नारियल** का भोग लगाया जाता है।
- तेजाजी सहरिया जनजाति के लोकप्रिय देवता माने जाते हैं।
- इनका पुजारी कुम्हार जाति का होता है।
- धोल्या गोत्र की महिलाएँ पुर्नविवाह नहीं करती हैं।
- **तेजाटेर**–तेजाजी से संबंधित गीतों को तेजाटेर कहा जाता है। मान्यता है की तेजाजी के गीतों के साथ खेतों में बुआई की जाती है, तो फसल अच्छी होती है। गीत के बोल–

  'गाज्या–गाज्यौ जेठ असाड़ कंवर तेजा रै,

  लगतोड़ी गाज्यौ रे सावण भादवौ।'

- **नोट :** तेजाजी का सुरसुरा गाँव में मंदिर या जिसकी मूर्ति को महाराजा अभयसिंह के काल में परबतसर का हाकिम ले आया तब से परबतसर (डीडवाना–मुचामण) में तेजाजी का प्रमुख स्थित है।

- **मान्यतानुसार** – तेजाजी खेतों में काम करते थे। इनकी भाभी इनके लिए भोजन लेकर खेत में जाया करती थी। एक दिन इन्हें रास्ते में देरी हो गई और तेजाजी भूख से परेशान हो रहे थे। इसलिए भाभी के पहुँचते ही तेजाजी ने क्रोध में भला–बुरा कहा जिसे सुनकर इनकी भाभी ने कटु वचन बोल दिया। तेजाजी की शादी बचपन में ही हो गई थी, लेकिन इनकी पत्नी पेमल अपने पीहर **'पनेर गाँव'** में रहती थी। इन कटु वचनों को सुनकर तेजाजी अपनी पत्नी को लेने के लिए अपने ससुराल पनेर गाँव में अपने ससुर रामचन्द्र जाट के घर पहुँचे। यहाँ पर पेमल की माँ व इनकी सास गाय का दूध निकाल रही थी, तो इनकी गाय डर गई और दूध की बाल्टी में लात मार दी। पेमल की माता ने बिना सोचे–समझें कहा था कि– **'कुण नाग रो काटियोड़ौ आयो है, जिको म्हारी गायाँ भिड़कायदी।'** तेजाजी इन कटु वचनों को सुनकर वापस लौट रहे थे, लेकिन पेमल ने उन्हें रोका और अपनी सहेली **'लाछा गुर्जरी या हीरा गुर्जरी'** के घर ठहराया। उसी दिन लाछा की गायों को मेर के मीणा चुराकर ले जा रहे थे, तेजाजी ने इनका पीछा किया और मण्डावरिया नामक स्थान पर युद्ध करके इन गायों को छुड़वाया। इस युद्ध को इतिहास में **'मण्डावरिया के युद्ध'** के नाम से जाना जाता है। पनेर गाँव पहुँचने पर पता लगा कि एक गाय का बछड़ा मीणाओं के पास ही रह गया, इसलिए तेजाजी गाय का बछड़ा लेने के लिए वापस गए। समय का संयोग था कि रास्ते में आग जल रही थी और उसमें जलते हुए साँप को तेजाजी ने देखा और उसे बाहर निकाल दिया। इस पर साँप ने क्रोधित होकर कहा **'सुन रे मोटा सिरदार, जुल्म कर दीनों, म्हारी छूटती जूण बचा, म्हाने क्यों बचा लीनों।'**

❖ **इस पर तेजाजी ने कहा कि–**

- **'थारी बचादी ज्यान, बुरों काम कई किणों, तू जस के बदले अपजस किणतर दिनों।'** लेकिन वापस साँप ने कहा–'मैं तुम्हें डसूंगा, तुमने मुझे बचाकर अपराध किया है। मैं अपनी नागिन के साथ जल रहा था। अब वह तो जल गई और मैं बच गया।'
- लोक देवता तेजाजी ने साँप से कहा कि यदि आपकी यही इच्छा है तो मेरी आपसे विनती है कि– **'मैं लाछा गूजरी का बछड़ा लेने जा रहा हूँ वापस आकर आपके सामने जरूर हाजिर होऊँगा यह मेरा आपसे वचन है।'** साँप ने उन्हें जाने दिया और बछड़ा छुड़वाने में मेर के मीणाओं से भयंकर युद्ध किया जिसमें तेजाजी घायल हो गये और तेजाजी घायल अवस्था में ही अपना वचन निभाने साँप के सामने उपस्थित हुए तो सर्प ने डसने से मना कर दिया कि मैं खण्डित देह पर नहीं डसता हूँ। तब तेजाजी ने अपना भाला आगे कर दिया और कहा कि आप इस पर चढ़कर मेरी जिह्वा को डसे तब साँप ने डसने से पहले इनको वरदान दिया कि संसार में कितना भी जहरीला सर्प दंश हो आपका नाम लेने से जहर निष्प्रभावी हो जाएगा और आप युगों–युगों तक साँपों के देवता के रूप में पूजे जायेंगे। जिस साँप ने तेजाजी को डसा उसका नाम बासग था और जिस स्थान पर डसा वह स्थान **'सैंदरिया'** था और **सुरसुरा** नामक स्थान पर तेजाजी के प्राण पखेरू उड़ गये। इनकी मृत्यु का समाचार इनके घर लीलण ही ले जाती है।

कल्ला जी

- **जन्म** – **सामियाना गाँव** मेड़ता नागौर में आश्विन शुक्ल अष्टमी 1544 ई. में हुआ।
- **पिता** – आससिंह।
- **माता** – श्वेत कुंवर।
- **पत्नी** – कृष्णा कुंवरी शिवगढ़, डूंगरपुर की राजकुमारी
- **गुरु** – **भैरव नाथ**
- **कुलदेवी** – **नागणेची माता**
- ये जयमल राठौड़ व मीरा के भतीजे थे। इनका मूल नाम केसरसिंह था।
- इन्हें योग शक्तियों द्वारा सिद्धियाँ प्राप्त थी। इन्हें जड़ी बूटियों का भी पर्याप्त ज्ञान था।
- इन्हें **'चार हाथ तथा दो सिर वाला देवता'** कहा जाता है।
- इन्हें **'शेषनाग का अवतार'** माना जाता है।
- कल्लाजी का निवास :– हवेली कहलाता है।

❖ **कल्लाजी के उपनाम :**

1.	कल्याण	2.	केहर
3.	कमधज	4.	कमधण
5.	योगी	6.	ब्रह्मचारी

❖ **इनके प्रसिद्ध स्थान :**

1.	गातरोड़	–	बांसवाड़ा
2.	भौराईगढ़	–	डूंगरपुर
3.	वरदा	–	डूंगरपुर
4.	सामलिया	–	डूंगरपुर

- सामलिया में श्रावण शुक्ल अष्टमी को मेला भरता है। यहाँ कल्लाजी की काले पत्थर की मूर्ति है जहाँ आदिवासी **अफीम व केसर** चढ़ाते है। मान्यता है कि कल्ला जी की आत्मा मुख्य सेवक **'किरणधारी'** के शरीर में प्रवेश कर लोगों के कष्ट को आज भी अपनी शक्ति अर्थात् तलवार से दूर करते हैं।
- यह असाध्य रोगों का इलाज करते हैं जैसे–बहरापन, गूंगापन, मिर्गी आदि।

- कल्लाजी ने गमेती पेमला नामक डाकू का दमन किया।
- मेवाड़, गुजरात, मारवाड़ तथा मध्य प्रदेश में इनके लगभग 500 मन्दिर हैं।
- **कल्ला जी की छतरी**-भैरव पोल, चित्तौड़ में स्थित है।
- इनकी मुख्य पीठ **रनेला-सलूम्बर** जिले में स्थित है।
- मेवाड़ महाराणा उदयसिंह ने इन्हें रनेला का जागीरदार नियुक्त किया।

धन्य जननी जन्यों, कुंवर कल्ला राठौड़

आन-बान पर घर छोड्यो, आयो गढ़ चित्तौड़।

कल्ला जी कमधज तथा दो सिर व चार हाथों के देवता क्यों ?

- कल्लाजी जयमल राठौड़ के भतीजे थे, कल्लाजी की बुआ मीराबाई तथा फूलकंवर थी। मीराबाई की शादी मेवाड़ के राजकुमार भोजराज के साथ व फूलकंवर की शादी फत्ता सिसोदिया से हुई। जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया मेवाड़ महाराणा उदयसिंह के सेनापति थे। जब मेवाड़ पर 1568 में मुगल आक्रमण हुआ तब चित्तौड़ के किले का भार जयमल जी पर था। जयमल जी के पैर पर युद्ध में अकबर की संग्राम नामक बंदूक से गोली लगी तो वह खड़े रहने में असमर्थ थे लेकिन उनके भतीजे कल्लाजी ने उन्हें अपने कंधों पर बैठाकर युद्ध लड़ा इसलिए वे दो सिर व चार हाथों वाले देवता कहलाये।

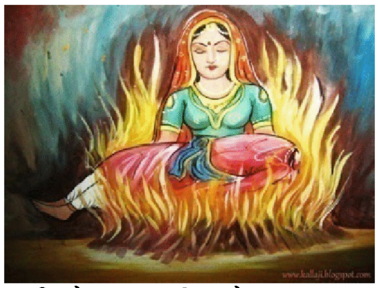

- कल्लाजी, माँ नागणेची के भक्त थे। इनमें अदम्य साहस और वीरता थी जिस समय मेवाड़ पर आक्रमण हुआ उनका विवाह शिवगढ़ के राजा कृष्णदास की पुत्री कृष्णाकुमारी से हो रहा था लेकिन तोरण पर ही इन्हें मेवाड़ पर मुगल आक्रमण की सूचना मिली और वह विवाह छोड़कर अपनी होने वाली पत्नी से वापस मिलने का वायदा करके चित्तौड़ पहुँच जाते हैं और चित्तौड़ में चतुर्भुजी विष्णु के रूप में लड़ते हुए इनका सर धड़ से अलग हो जाता है। लेकिन धड़ से ही दुश्मन के छक्के छुड़ाते रहे और इसी अवस्था में बिना सिर के धड़ सहित कृष्णाकंवर से मिलने रवाना हुए और उधर कृष्णाकंवर को ऐसी सूचना मिलने पर शिवगढ़ से वह भी रवाना हुई और दोनों का मिलन रनेला नामक स्थान पर हुआ और कृष्णा कंवर उनके साथ ही सती हुई। इस तरह कल्लाजी ने अपना वचन निभाया।

मल्लीनाथ जी

- **जन्म**–1358 ई. में मारवाड़ के शासक रत्न सलखा (तीड़ाजी) के यहाँ हुआ था।
- **माता**–जाणीदे
- **पत्नी – रूपादे– मारवाड़ में बरसात की लोक देवी** के रूप मे पूजी जाती है। इनका मंदिर बालोतरा के **मालाजाल गाँव** में स्थित है।
- **गुरु – उगमसी भाटी**
- **ये चमत्कारी पुरुष, भविष्यदृष्टा तथा त्राता** नाम से जाने जाते हैं।
- बचपन में ही इनके पिता की मृत्यु होने पर ये खेड़, मेहवा (मेवानगर) में अपने चाचा कान्हड़दे के साथ राज–काज में मदद करने लगे। इनके राजकार्य की शैली व वीरता से प्रसन्न हो इनके चाचा ने इन्हें मेहवा का एक परगना सत्ता के रूप में दे दिया।
- सन् 1378 में फिरोजशाह तुगलक द्वारा नियुक्त मालवा के सूबेदार निजामुद्दीन की 13 दलों की सेना को वीरता से पराजित किया। इसीलिए इनके संदर्भ में एक उक्ति प्रचलित है–

  तेरह तुंगा भांजिया, माले सलखाणी।

- मल्लीनाथजी ने 1389 ई. में अपनी पत्नी की प्रेरणा से **उगमसी भाटी** को अपना गरु बनाया। इनका मूलनाम मालदेव था लेकिन गुरु दक्षिणा लेने के बाद इनका नाम मल्लीनाथ हुआ। इनके गुरु भाई धारूमेघ थे। ये निर्गुण निराकार भक्ति में विश्वास रखने वाले थे।
- मल्लीनाथजी के पुत्र जगमाल व कुंपा थे। जगमाल ने जब अपनी महत्वकांक्षा के चलते अपने ही चाचा की हत्या की तो मल्लीनाथजी ने इन्हें श्राप दिया था **'माले रा मढ में वीरम रा गढ़ में'** अर्थात् मल्लीनाथ जी के वंशज साधना तपस्या में लीन होंगे जबकि **वीरमदेव (जगमाल के चाचा)** की संतान राज–काज करेगी।
- मल्ली नाथ के नाम पर **बाड़मेर परगने का नाम मालाणी** पड़ा। इनके वंशज मेहचा राठौड़ कहलाये।
- इनका प्रमुख मंदिर लूणी नदी के किनारे **तिलवाड़ा बालोतरा** में है जहाँ चैत्र कृष्ण ग्यारस से चैत्र शुक्ल ग्यारस तक पशु मेला भरता है जो यह राज्य का सबसे प्राचीन मेला है।
- इन्होंने 1399 ई. में **कुण्डा पंथ** की स्थापना की तथा मारवाड़ के सभी संतों को इकट्ठा कर वृहद् हरी कीर्तन करवाया था।

तल्लीनाथजी

- **जन्म** –1544 ई. शेरगढ़, जोधपुर
- इनका वास्तविक नाम **गागदेव राठौड़** था।
- **पिता** – वीरम देव (शेरगढ़ जोधपुर के शासक थे)
- **गुरु** – **जालन्धर**
- पांचौटा गाँव जालौर में इनकी मान्यता ज्यादा है, जहाँ इनकी **मूर्ति घुड़सवार** के रूप में स्थापित है।
- ये **प्रकृति प्रेमी** थे, इनके स्थान के आस–पास कोई पेड़ नहीं काटता क्योंकि **इन वनों को देववन या ओरण** माना जाता है।
- **ओरण** –इनके द्वारा संरक्षित वनक्षेत्र।
- जहरीला जानवर काट जाने पर इनके नाम का डोरा बाँधा जाता है।
- ये मण्डोर के शासक राव चूण्डा के समकालीन थे।

देवबाबा

- **मन्दिर** – नगला जहाज, **बैर भरतपुर** में है जहाँ इनका मेला **चैत्र व भाद्रशुक्ल पंचमी** को भरता है। देवबाबा मूर्ति में एक हाथ में झाड़ व दूसरे हाथ में लाठी लिये सवार हैं। देवबाबा के थान, विशेषकर **नीम के पेड़ के नीचे** होते हैं।
- इन्हें **पशु चिकित्सा** का अच्छा ज्ञान था।
- ये गुर्जरों के पालन हार एवं कष्ट निवारक देवता के रूप में जाने जाते हैं।
- ये भीलों के **आराध्य देव** भी कहलाते हैं।
- ये ग्वालों को भोजन कराने में प्रसन्न होते थे। इस भोजन को **ग्वाला जीमण दावत** भी कहा जाता था।
- **सवारी–भैंसा**।
- **मान्यता**–इन्होंने अपनी मृत्यु के बाद भी अपनी बहन **एलादी** का मायरा भरा था।

भूरिया बाबा

- **शौर्य** के प्रतीक देवता जिन्हें इन्हें **गौतमेश्वर** के रूप में भी पूजा जाता है।
- इस रूप में इनका मंदिर **अरनोद (प्रतापगढ़)** में है। यहाँ मंदागिरी कुण्ड (पापमुक्ति कुण्ड) स्थित है जिसे आदिवासी पापनाशक तीर्थ स्थल के रूप में पूजते हैं।
- ये मीणा जाति के **इष्ट देव** हैं। मीणा लोग इनकी **झूठी कसम** नहीं खाते हैं।
- सिरोही में अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य सूकड़ी नदी के किनारे **पोसलिया गाँव**, शिवगंज सिरोही में प्रतिवर्ष 13 अप्रैल–15 मई में इनका मेला लगता है। जहाँ **वर्दीधारी पुलिस** का इनके मन्दिर में प्रवेश वर्जित है। मेले के अवसर पर जनजाति समुदाय के लोग अपने पूर्वजों की अस्थियों को सूकड़ी नदी में प्रवाहित करते हैं।

☞ **नोट** - सूकड़ी लूनी नदी की सहायक नदी है।

हरिराम बाबा

- **जन्म** – 1602 ई. में झोरड़ा गाँव (नागौर) में हुआ
- **पिता** – रामनारायण
- **माता** – चंदणी देवी।
- **गुरु** – भूरा जी
- **प्रतीक** – चरण कमल
- झोरड़ा गाँव में इनका मन्दिर स्थित है।
- इनका मेला **चैत्र शुक्ल चतुर्थी व भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी-पंचमी** को भरता है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति के स्थान पर **सांप की बांबी (बिल) तथा बाबा के प्रतीक के रूप में चरण चिह्न पूजे जाते हैं।** इन्हें बजरंग बली का परम भक्त माना गया है।
- ये **सर्प दंश** का इलाज करते थे। साँप काटने तथा अन्य रोगों के निदान हेतु इनके नाम की तांती बांधने अथवा भस्म लगाने की परम्परा है।

झुंझार बाबा

- इनका जन्म **इमलोहा गाँव, नीमकाथाना, सीकर** में राजपूत परिवार में हुआ।
- ये अपने भाईयों के साथ मिलकर मुस्लिम लुटेरों से गाँव की रक्षा करते हुए स्यालोदड़ा के पास शहीद हो गए तथा इस युद्ध में पास से गुजरती हुई बारात में से दूल्हा-दुल्हन भी मारे गये।
- झुंझार जी का मंदिर नीमकाथाना के **स्यालोदड़ा गाँव** में स्थित है। इनके मंदिर में पत्थर की पाँच मूर्तियाँ है। जिनमें तीन भाईयों की व दो दूल्हा-दुल्हन की मूर्तियाँ हैं। यहाँ प्रतिवर्ष **रामनवमी (चैत्र शुक्ल नवमी)** को इनका मेला भरता है।
- झूंझार जी के स्थान प्राय: **खेजड़ी वृक्ष** के नीचे होते हैं।

खेमबाबा

- **जन्म** – **धारणधारा, बायतु, बालोतरा।**
- **पिता** – कानाराम जाखड़।
- **माता** – रूपादे।
- **गुरु** – **नामनाथ**।
- इन्हें **गोगाजी** का अवतार माना जाता है।
- ये गौ रक्षक देवता के रूप में भी जाने जाते हैं।
- इनके जीवन का मूल उद्देश्य लोगों के दु:खों को दूर करना ही था।

रूपनाथ जी (झरड़ा जी)

- ये पाबूजी के भतीजे थे।
- इन्होंने जींदराव खींची को मारकर पिता व चाचा की मौत का बदला लिया।
- इनके प्रमुख मंदिर **कोलू (फलौदी) व शिम्भूदड़ा (नोखा, बीकानेर) में** है।
- इन्हें हिमाचल प्रदेश में **'बालकनाथ' के रूप में पूजा** जाता है तथा इन्हें **'झरड़ा जी'** के नाम से भी जाना जाता है।

केसरिया कुँवर जी

- ये गोगाजी के पुत्र थे तथा सर्परक्षक देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- इनके थान पर **सफेद ध्वजा** फहरायी जाती है।
- इनके यहाँ **सर्प दंश** का ईलाज होता है। जिसमें पुजारी रोगी का जहर अपने मुँह से चूसकर निकालता है।
- इनका थान खेजड़ी वृक्ष के नीचे ही होता है जहाँ इनका प्रतीक चिह्न सर्प है।
- ददरेवा (राजगढ़, चूरू) व ब्रह्मसर (हनुमानगढ़) में इनका मंदिर है।
- इनका मेला भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (जन्माष्टमी) को भरता है।

बिग्गाजी

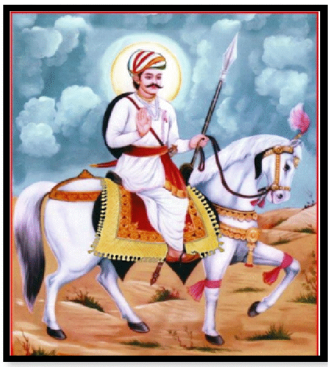

- **जन्म** – **रीड़ी गाँव** श्रीडूंगरगढ़ बीकानेर (जागंल प्रदेश) में जाट परिवार।
- **पिता** – **मेहन्द/मोहन**
- **माता** – सुल्तानी
- **सवारी** – **शायर घोड़ी**
- ये **गायों के देवता** के रूप में प्रसिद्ध है।
- इन्होंने पूरा जीवन **गौ संवर्धन** में बिताया।
- ये **जाखड़ समाज** के लोक देवता माने जाते हैं।
- बिग्गाजी मुस्लिम लुटेरों से गायों को बचाते हुए **'राठाली जोहड़ी'** के युद्ध में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये।

पनराज जी

- **जन्म** – नया गाँव, जैसलमेर में कंगनभाटी के यहाँ हुआ।
- ये अपनी कुलदेवी **स्वांगिया माता तथा कृष्ण के अनन्य भक्त** थे। ये महान योद्धा, गौ–भक्त व प्रजापालक के रूप में जाने जाते हैं।
- इन्होंने काठोड़ी गाँव के पालीवाल **ब्रह्मणों की गाये सिंध के मुस्लिम** लुटेरों से छुड़ाते हुए वीर गति पाई। इन्हें **मुढैया पीर** के नाम से भी जाना जाता है।
- इनका मेला **पनराजसर नामक स्थान पर माघ व भाद्रशुक्ल दशमी को** भरता है।

फत्ता जी

- **जन्म – सांथू गाँव,** जालौर में **गज्जारणी** परिवार में हुआ।
- **मेला**–सांथू गाँव में भाद्रपद शुक्ल नवमी को भरता है।
- इन्होंने अपने गाँव को लुटेरों से बचाते हुए वीरगति पायी।
- इन्हें शस्त्र विद्या का ज्ञान था।
- इनके थान बबूल वृक्ष के नीचे होते हैं।

डूंगजी–जवाहर जी

- ये बठोठ (पटोदा, सीकर) के **कछवाहा राजपूत** थे। (डूंगजी चाचा थे व जवाहर जी भतीजे थे)
- ये दोनों शेखावाटी क्षेत्र में धनी लोगो को लूटकर, उनका धन गरीबों में बाँट देते थे। इन्हें **क्रान्तिकारी लुटेरों** के रूप में जाना जाता है।
- इनका वास्तविक नाम बलजी–भूरजी था।

- **इनके मुख्य सहयोगी**–लोटिया जाट, करणीया मीणा, सांवता मीणा तथा बीलो नाई था।

❖ **छावली:-** डूंगजी, जवाहरजी के गीत जिन्हें भोपों द्वारा गाये जाते हैं। जिसके बोल इस प्रकार हैं–

'भला-भला रा टूक उड़ावैं, लड़े डूँगजी जवाहर

लोटिया जाट, करणियो मीणो, वध-वध वावै तलवार'

तोड़ आगरौ बाहर निसरया, बोल्या जै जैकार।

- डूंगजी जवाहरजी को राजस्थान का **'राबिनहुड'** भी कहा जाता है।

☞ **नोट :-** 'अंग्रेजी लोकगाथाओं में राबिनहुड एक बहिष्कृत हीरो था जो अचूक तीरंदाज व कुशल तलवारबाज था वह अपने साथी मेरीमेंस के साथ मिलकर अमीरों की सम्पत्ति को लूटकर गरीबों में बाँट दिया करता था।'

❖ **दोहा :-**

जै कोई जणती राणियाँ, डूंग जिसा जवान।

फिरतो नहीं हिंदवाने में झण्डों फिरंगान।

डूँगजी जवाहरजी के संबंध में कहानी

- राजस्थान में अंग्रेजों को क्रांतिकारियों का हमेशा से कड़ा प्रतिरोध झेलना पड़ा था। बठोठ पाटोदा के डूंगरसिंह जवाहरसिंह का नाम राजस्थान के महान क्रांतिकारियों में गिना जाता हैं। इन्होंने शेखावटी क्षेत्र में अंग्रेज विरोधी आन्दोलन का शंखनाद कर सभी जातियों तथा वर्गों में आन्दोलन की चिंगारी जलाई।
- डूंगजी व जवाहर सिंह बठोठ (पाटोदा, सीकर) के ठाकुर थे। अंग्रेजों को देश से निकालने की भावना इनमें कूट कूट कर भरी हुई थी। अत: उन्होंने अपना दल बनाया और अंग्रेज छावनियों को लूटना एवं उन्हें नुकसान पहुँचाना शुरू किया। अपने दल के लिए जब धन की आवश्यकता हुई तो इन्होने रामगढ़ के सेठों से धन की मांग की लेकिन सेठों ने अंग्रेजों के भय से उन्हें धन देने से इनकार कर दिया। अत: डूंगजी जवाहरजी व उनके साथियों ने रामगढ़ के सेठों के काफिलों को लूटकर काफी धन गरीबों में बाँट दिया। सेठों ने अंग्रेजों से रक्षा की फरियाद की, इस पर अंग्रेजों ने डूंगजी के साले भैरोसिंह गौड़ (झड़वासा, नसीराबाद अजमेर) को लालच दिया। उसने डूंगजी को सोते हुए गिरफ्तार करवा दिया। अंग्रेजों ने उन्हें कैद कर आगरा के किले में भेज दिया।

मगर छः महीनों में ही जवाहरजी ने किले से डूंगजी को मुक्त करवा दिया। 1847 में डूंगजी जवाहरजी ने छापामार लड़ाइयों से अंग्रेजों को परेशान कर दिया। देशी राजाओं द्वारा अंग्रेजों को सहयोग दिए जाने पर वे दुखी थे, पर उनके हौसलें बुलंद थे। 18 जून, 1847 को इन्होंने नसीराबाद छावनी पर हमला किया और 52 हजार रूपये व घोड़े लूट लिए। इस लूटे हुए धन से डूंगजी ने भीलवाड़ा में धनोप माता के मंदिर का निर्माण करवाया।

- इस घटना से डूंगजी जवाहरजी की प्रसिद्धि फैल गई। अंग्रेज डूंगजी–जवाहरजी के नाम से भयभीत होने लगे। अंग्रेजों ने इन्हें गिरफ्तार करने के हरसंभव प्रयास किये। जवाहर सिंह बीकानेर के महाराजा रतनसिंह के पास चले गये, जिन्होंने अंग्रेजों के दवाब के बावजूद जवाहरजी को सौंपने से इनकार कर दिया वहीं डूंगजी ने अपने को चारो ओर से घिरा पाकर जोधपुर राज्य के आश्वासन पर आत्मसमर्पण कर दिया कि उन्हें अंग्रेजों को नहीं सौंपा जाएगा। लेकिन अंग्रेजों के दवाब के कारण जोधपुर के शासक ने डूंगजी को अंग्रेजों को सौंप दिया। लेकिन जोधपुर के बावन रजवाड़ों द्वारा डूंगजी को जोधपुर को सौंपे जाने की मांग पर अंग्रेजों ने अगस्त 1848 में डूंगजी को पुनः जोधपुर को सौंप दिया। आज भी इन वीरों की गाथाएं गाँव–गाँव में सुनाई देती हैं।

आगरा की कैद से डूंगरसिंह को छुड़वाना

- जब ब्रिटिश हुकुमत ने डूंगजी को आगरा की सुरक्षित जेल में बंद कर दिया। यह खबर जब जवाहर सिंह को लगी तो उन्होंने एक योजना बनाई तथा डूंगरसिंह जी को आगरा जेल से आजाद करवा लिया। इस योजना को अंजाम देने के लिए लोटिया जाट एवं सांवत मीणा को जेल की गतिविधियों की टोह लेने के लिए सबसे पहले आगरा भेजा। जब इन दोनों ने पूरी तरह रेकी करने के बाद योजना को अंजाम दिया जिसमें दूल्हे की बारात सजाई गई पूरा लवाजमा तैयार किया गया और आगरा के पास आकर ठहरे तथा बारात में दूल्हे के मामाजी के मरने का बहाना बनाया और एक भेड़ को मारकर उसकी अर्थी बना उसका दाह संस्कार किया और 12 दिन यहीं बिताने की बात कहकर अंग्रेजों का ध्यान अपनी ओर से हटा लिया। आखिर योजना के मुताबिक मुहर्रम के दिन इन सभी ने आगरा जेल पर हमला कर डूंगर सिंह व सभी कैदियों को छुड़ा लिया। इस हमलें में कई साथियों ने अपनी जान भी गंवाई मगर अंग्रेजी सरकार को स्तब्ध कर उनके हाथों से क्रांतिकारियों को छीन ले आए।

अंग्रेजों की नसीराबाद छावनी को लूटना

- आगरा की कैद से रिहाई के बाद डूंगजी–जवाहर जी अपने साथियों के साथ मिलकर अंग्रेज छावनियों को लूटने और नष्ट करने के काम में लग गये। इस कार्य हेतु उनकी कई देशप्रेमी साहूकारों ने मदद भी की। डूंगरसिंह जी ने इसी सिलसिले में नसीराबाद की छावनी पर आक्रमण कर अंग्रेजी सेना के टेंट लूटकर जला दिये। इस लूट के बाद ब्रिटिश सरकार उन्हें किसी भी सूरत में पकड़ना चाहती थी।

- बीकानेर के ठाकुर हरनाथ सिंह के विश्वास पर जवाहर सिंह ने आत्म समर्पण कर दिया तथा अंग्रेजों ने भी उन्हें सम्मान सहित बीकानेर जाने दिया। उधर डूंगरसिंह इन सेनाओं के घेरे से बचकर जैसलमेर चले गये। आखिर जैसलमेर के गिरदादे गावं के पास मेडी में डूंगरसिंह जी ने आत्म समर्पण कर दिया और जोधपुर में इन्हें नजर बंद रखा गया और यहीं इनका देहांत हो गया।

ईलोजी

- इलोजी मारवाड़ में **छेड़छाड़ के लोक देवता** तथा **कुँवारों का देवता** नाम से प्रसिद्ध है।
- मारवाड़ में अविवाहित लोग अच्छे वर-वधू के लिए इनकी पूजा करते हैं, जबकि वे स्वयं कुँवारे थे। ईलोजी के मंदिर में इनकी आदमकद नग्न प्रतिमा होती है।
- इनका मंदिर बाड़मेर में स्थित है।
- **मान्यतानुसार**- ये होलिका के होने वाले पति थे। इलोजी की बारात जब हिरण्यकश्यप के घर पहुंची उससे पहले ही हिरण्यकश्यप की बहिन होलिका भक्त प्रहलाद को अपनी गोद में बैठाकर मारने के लिए अग्नि में बैठ गई। प्रहलाद तो बच गये लेकिन होलिका जल गयी। हिरण्यकश्यप होलिका से बहुत प्रेम करते थे। उन्हें जैसे ही इस बात का पता चला उनको बहुत दु:ख हुआ और वह उसी स्थान पर पहुँच गये जहाँ होलिका राख का ढेर हुई थी। ईलोजी ने उस गरम-गरम राख को अपने शरीर पर लगाया और आजीवन कुँवारे रहने की शपथ ली।

वीर बावसी

- वीर बावसी आदिवासियों के प्रसिद्ध लोक देवता है, इन्हें विशेषकर **गौड़वाड़ क्षेत्र** में पूजा जाता है।
- इनका मंदिर कालाटोकरा, सिरोही (अरावली पर्वतमाला की दुर्गमघाटी) नामक स्थान पर स्थित है जहाँ प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल पंचमी को मेला भरता है।
- आदिवासियों की मनौती पूर्ण होने पर इनके यहाँ मिट्‌टी से निर्मित कलात्मक घोड़े चढ़ाये जाते हैं, जिन्हें **घोड़ाबावसी** कहा जाता है।

पंचवीर जी

- **मंदिर** - अजीतगढ़ (सीकर)
- ये शेखावाटी के प्रिय लोकदेवता जो शेखावत समाज के लोक देवता माने जाते हैं।

पीर पीथोरा

- यह हिंद व सिंध दोनों जगह श्रद्धा से पूजे जाते हैं। इस हिंदू पीर का जन्म मीरपुर, पाकिस्तान के अकड़ी गाँव में राजा माण्डण सोढ़ा के यहाँ हुआ इनकी माता सोनल कंवर चेलक गाँव जैसलमेर की निवासी थी।
- गुरु – भैरवनाथ।
- यह अधिकतर सूफी संतों के साथ रहते थे।
- इन्हें सूफी संत वहाउद्दीन ने **हिन्दू पीर** कहकर पुकारा।

वीर बीकासी

- **जन्म** – जैसलमेर में हुआ।
- पिता–जांजण जी।
- इन्होंने ब्राह्मणों की रक्षा करते हुए वीरगति पाई।

दशरथ जी मेघवाल

- ये राजस्थान के एकमात्र **दलित गौ रक्षक देवता** हैं।
- इनका मंदिर देशनोक, बीकानेर में करणीमाता मंदिर के प्रांगण में स्थित है।
- दशरथ जी मेघवाल करणीमाता के शिष्य थे।

आलमजी

- मूलनाम – **जेतमालोत राठौड़**
- बाड़मेर के **राड़धरा क्षेत्र** के लोकदेवता। इन्होंने राड़धरा को डाकुओं के आतंक से मुक्त कराया।
- इनका मंदिर **गुढ़ामलाणी, बाड़मेर** में लूणी नदी के किनारे **ढांगी** नामक टीले पर स्थित है। इस टीले को **'आलम जी का धोरा'** नाम से जाना जाता है। यहाँ भाद्रशुक्ल द्वितीय व माघशुक्ल द्वितीया को मेला भरता है। इनके संबंध में एक दोहा प्रसिद्ध है–

'घर ढांगी आलम घणी, परधाक लूणी पास।

लिखयौ जिणनै लाभसी, राड़धारौ रहवास।।'

- **मान्यतानुसार**–दिल्ली के सुल्तान ने अरब देश से मिट्‌टी मंगवाई जो की गुढ़ामालाणी तक ही पहुँच पाई। अरब देश के घोड़े पूरे देश में प्रसिद्ध है। अत: इसी धारणा के साथ इस क्षेत्र में अश्वपालक अपनी गर्भवती घोड़ियों को अच्छी नस्ल हेतु यहाँ लाकर बच्चा पैदा करवाते हैं। इसीलिए इस क्षेत्र को **घोड़ो का तीर्थ-स्थल** कहा जाता है।

हिरामनजी

- ये गुर्जर समाज के लोक देवता हैं जिनके नाम की **'बोलमा बोली जाती है'**। जिससे मनुष्य व जानवरों के रोग ठीक हो जाते हैं। इनके सम्पूर्ण जीवन का यशोगान **'गोठ'** कहलाता है।
- इनके थान अजमेर, भीलवाड़ा व हाड़ौती क्षेत्र में हैं।

मामादेव

- ये **बरसात के लोकदेवता** माने जाते हैं।
- इनका मंदिर स्यालोदड़ा, नीमकाथाना, सीकर में स्थित है।
- इनका लकड़ी का तोरण पूजा जाता है, जो गाँव के बाहर सड़क पर स्थापित किया जाता है।
- इन्हें मिट्‌टी के घोड़े अर्पित किये जाते हैं तथा इनकी सर्वाधिक मान्यता शेखावाटी क्षेत्र में है।
- मामादेव को प्रसन्न करने के लिए **भैंसे की बलि** दी जाती थी।

☞ **नोट**–**'बड़लिया हिंदवा'** लोकगाथा का संबंध लोक देवता मामादेव से है।

भौमिया जी

- इन्हें **भूमि रक्षक देवता** कहते हैं जो **सर्वत्र राजस्थान में पूज्य** हैं।
- इनके थान विशेषकर पूर्वी राजस्थान में गाँव–गाँव में बने हैं। इनकी मूर्ति अश्वारोही रूप में पत्थर पर उत्कीर्ण होती है तथा मूर्ति के दोनों तरफ **सूर्य व चन्द्रमा अंकित** होते हैं। नवदम्पत्ति भौमिया जी की जात भी देते हैं। कुआँ खोदने या भूमि संबंधित किसी कार्य को करने से पहले भौमिया जी की पूजा की जाती है। नाहरसिंह भौमिया जयपुर में तथा सूरजमल जी भौमिया का मंदिर दौसा में प्रसिद्ध है।

क्षेत्रपालजी

- क्षेत्रपालजी **ग्राम रक्षक देवता** के रूप में प्रसिद्ध है।
- क्षेत्रपालजी को **खेतलाजी** नाम से जाना जाता है। जिनका मंदिर सोनाणा देसूरी, पाली में स्थित है।
- यहाँ हकलाने वाले बच्चों का ईलाज किया जाता है।

बलजी-भूरजी

- पाटोदा सीकर के निवासी दोनों भाई क्रांतिकारी लूटेरे तथा जनमानस के हृदय सम्राट कहलाये।

आइए जानते हैं क्यों ?

- पाटोदा गांव के भूरसिंह शेखावत अति साहसी, तेज मिजाज तथा रोबीले व्यक्तित्त्व के धनी व्यक्ति थे। उनके बड़े भाई बलसिंह शेखावत पाटोदा जागीर के ठाकुर थे। भूरसिंह के रोबीले व्यक्तित्व को देखकर अंग्रेजों ने उन्हें आउट आम्स रायफल्स में सीधा सूबेदार पद पर भर्ती कर लिया था। अचूक निशानेबाज तथा स्वाभिमानी भूरसिंह जल्द ही सभी भारतीय सिपाहियों के आदर्श बन गए। अंग्रेजों द्वारा भारतीय सिपाहियों के साथ किया जाने वाला दुर्व्यवहार भूरसिंह को बर्दाश्त नहीं होता था। इसी के चलते एक दिन उन्होंने अपने अंग्रेज अफसर की हत्या कर दी और वहां से फरार हो गए। वापस अपने गांव पाटोदा आकर उन्होंने सारी घटना की जानकारी बड़े भाई बलजी को दी। ठाकुर बलसिंह भी अपने पूर्वजों डूंगरसिंह तथा जवाहरसिंह की मौत का बदला लेना चाहते थे इसलिए वे भी भूरसिंह के साथ बागी जीवन जीने निकल गए।
- बागी होने के बाद दोनों भाइयों ने अमीरों एवं सेठ-साहूकारों को लूटना आरम्भ कर दिया। लूटा हुआ धन वे गरीबों को देते थे। दोनों भाइयों की जोड़ी बलजी-भूरजी के नाम से चर्चित होने लगी। बलजी-भूरजी ने जोध पुर रियासत में डाके डाले जोधपुर रियासत में तो डाके डालने की श्रृंखला ही बना डाली। बलजी जहां धैर्यवान तथा मर्यादित स्वभाव के थे वहीं भूरजी तेज-तर्रार तथा गुस्सैल स्वभाव के थे। भूरजी के बारे में कहा जाता है कि जब उन्हें कुछ खास करने की जिद्द चढ़ती तो वे उस काम को पूरा करके ही दम लेते थे चूंकि भूरजी

अंग्रेजी सेना के बागी थे इसलिए अंग्रेज अफसर भी उनके पीछे पड़े हुए थे। अंग्रेजों को सबक सिखाने के लिए एक दिन भूरजी ने आम्स रायफल्स के नसीराबाद स्थित मुख्यालय से फिरंगी झण्डा उतारकर लाने का ऐलान कर दिया। भूरजी अंग्रेज अफसर की ड्रेस पहनकर उनके मुख्यालय पहुंच गए और उनके झण्डे को उतार लिया। अंग्रेजों को जब तक माजरा समझ में आता तब तक भूरजी उनकी पहुंच से बहुत दूर निकल चुके थे। बाद में इसी झण्डे को भूरजी अपने ऊंट की पूंछ से बांधकर रखने लगे। दोनों भाई लूट से मिले धन को गरीबों में बांट देते और हर जरूरतमन्द व असहाय की सहायता के लिए हमेशा तैयार रहते थे। इस कारण वे जहां भी जाते वहां के लोग उनका स्वागत राजा-महाराजा की तरह करते। स्वच्छन्द घूमते बलजी-भूरजी अंग्रेजों की नाक में हमेशा दम करके रखते लेकिन, कहते है समय हमेशा एक सा नहीं रहता।

- एक बार बलजी-भूरजी अपनी टोली के साथ डीडवाना होकर अजमेर जा रहे थे। रास्ते में उनकी मुठभेड़ जोध पुर रियासत के गुलाबसिंह नामक अधिकारी से हो गई जिसमें गुलाबसिंह की मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि गुलाबसिंह की जनता में अच्छी छवि थी जिसके चलते बलजी-भूरजी के सामने कठिनाइयां आने लगी। जोध पुर रियासत ने अपने जांबाज अधिकारी को खोने के बाद बलजी-भूरजी को पकड़ने का जिम्मा बख्तावर सिंह को सौंपा, जिनके बारे में कहा जाता था कि वह अधिकारी अपना काम पूरा करने से पहले घर नहीं लौटता था। बलजी-भूरजी को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक दिन बख्तावर सिंह को उनके बैरास गाँव में रहने की जानकारी मिली और उन्होंने दोनों भाईयों को 300 सैनिकों के साथ घेर लिया इस मुठभेड़ में बलजी भूरजी व उनके साथी गणेश नाई शहीद हो गए।

ओम बन्ना/ओमसिंह राठौड़

- **जन्म – चोटिला गाँव, पाली।**
- इन्हें **बुलेट वाले देवता** के नाम से जाना जाता है।
- इनकी पूजा सड़क दुर्घटना से बचने के लिए की जाती है।

कहानी

- **प्रिय विद्यार्थियों –** बात साल 1988 की है, जब पाली के रहने वाले ओम बन्ना (राजस्थान में राजपूत परिवार के युवा लोगों के लिए बन्ना शब्द का इस्तेमाल करते हैं) अपनी बुलेट बाइक से जा रहे थे और रास्ते में दुर्घटना हो गई और उनकी मृत्यु हो गई।
- **कहा जाता है कि** एक्सीडेंट के बाद इस बाइक को थाने ले जाया गया, लेकिन ये बाइक वहां से गायब हो गई। इसके बाद वो बाइक दुर्घटनास्थल पर मिली, जहां ओम बन्ना का एक्सीडेंट हुआ था। फिर इसके बाद इसे थाने ले जाया गया और फिर ये बाइक वापस उसी स्थान पर आ गई। ऐसा कई बार हुआ। कहा जाता है कि इस बाइक को पुलिस ने चेने से बांध कर भी रखा था, लेकिन फिर भी यह बाइक थाने से गायब हो गई। इसके बाद इसे चमत्कार माना गया और उस बाइक को उसी स्थान पर स्थापित कर दिया गया। इसके बाद लोग इसकी पूजा करने लगे और लोगों की आस्था बढ़ गई। इसके बाद लोगों का मानना है कि ओम बन्ना और बाइक उनकी रक्षा करते हैं और मनोकामना पूरी करते हैं।

कहा जाता है कि जब से बाइक का मंदिर बनाया गया है, तब से यहां कोई एक्सीडेंट नहीं हुआ, इसके बाद लोग दूर दराज से पूजा करने आते हैं।

***